10

B.A. Hons II Part क्रमशः- डॉ० अरविन्द कुमार (हिंदी)
Hindi 29/11/22 स्ना. स्नात० कॉले०, जहानाबाद
निराला

अभिव्यक्ति का सबसे प्रथम एवं प्रमुख साधन भाषा है क्योंकि हमारे अन्तःकरण में जैसे विचार रहते हैं वाणी ने साकार रूप प्रदान कर दूसरे के सम्मुख अभिव्यक्त किया करती है। हमारे विचारों एवं भावो का सम्पर्क जीवन के अनुभव से है। भाषा के माध्यम से कवि अपने विचारों को पाठक तक सम्प्रेषित करता है। ठीक भी कवि अपनी भावनाओं को पाठक के हृदय में सम्प्रेषित करने के लिए वस्तु या घटना परिस्थितियों की श्रृंखला का निर्माण करती है। पाठक काव्य में वर्णित घटना वस्तु या परिस्थिति को पढ़कर या सुनकर वैसे ही भावो का अनुभव करने लगता है जैसा कवि सम्प्रेषित करना चाहता है। निराला जी ने अपने काव्य में सर्वत्र भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। इसी कारण जहाँ कवि के भावों में दार्शनिक गंभीरता का आधिक्य है वहाँ उनकी भाषा भी अपेक्षाकृत अत्यधिक गहन, गंभीर एवं प्रौढ़ हो गयी है। जहाँ भावो में सुकुमारता एवं कोमलता है, वहाँ भाषा में भी सहज सुकुमारता एवं मधुरता दृष्टिगोचर होती है और भावो में जहाँ आक्रोश आवेश एवं उद्वेग के कारण कठोरता बनी हुई है वहाँ भाषा व्यंग्यात्मक होकर अधिक जटिल एवं कठोर हो गयी है। अतः निराला जी ने स्वर, ध्वनि, नाद एवं भाव के अनुकूल सर्वथा शब्द योजना की है। उनके शब्द चयन पर संस्कृत तथा बंगला भाषा का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। जहाँ कवि संस्कृत की समास बहुला गुम्फित शैली से प्रभावित हुआ है, वहाँ उसने अपनी कविताओं में 'कादम्बिनी' सी समास बहुला गुम्फित पदावली का प्रचुर प्रयोग किया है। इस भाषा शैली का प्रयोग कवि ने 'राम की शक्ति पूजा' तथा 'तुलसीदास' में अच्छी तरह किया है। बंगला की ललित मधुर एवं सुकुमार पदावली से प्रभावित हो कवि ने 'गीतिका' के अनेक गीतों की सुकोमल पदावली का